IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"Madhyamik star ke vidharthiyo ke aakanksha star ka unki srajnatmakta par padne wale prabhav"

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड.ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

—सुनीता कुमावत

(AssistantProfessor)

(Biyanigroupofcollege,Jaipur)

हर व्यक्ति अपनी उन आकांक्षाओ, स्वपनों और अभिलाषाओं को मेन केनप्रकारेण पूर्ण करना चाहता है जिन्हे अपनी सामर्थ्य की सीमाओं के कारण अथता परिस्थितिजन्य विवषता के कारण वह स्वंय प्राप्त नही कर सकता है। अपनी अपूर्णता की पूर्णता अपनी संतती में खोजता है।

इस प्रकार हर व्यक्ति, बालक आकांक्षा करते हैं उन अपेक्षाओं को पूर्ण करने की कोषिष करते हैं।

इस प्रतिस्पर्धा के युग में हर व्यक्ति इस योग्य होना चाहता है कि आने वाले समय में इस वैष्विक समस्या का सामना कर अपने लिए स्थान सुरक्षित कर सके। बालकों को कैसे आगे बढना है ये उनकी आकांक्षा पर निर्भर करता है।

बालक के अन्दर सर्जन की, कुछ नया करने की असीम संभावनाएं छिपी होती है। किसी में गाने, किसी में अभिनय करने की, किसी में लेखन या चित्र बनाने की, कोई खेलने में तो कोई पढने में आगे। बस जरूरत है तो उनक अन्दर छिपी इस प्रतिभा को उभारने की।

प्रस्तावना :–

षिक्षा वह प्रकाष है जिससे सामाजिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। षिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढी को, बालको को उच्च आदर्षो, आषाओं, आकांक्षाओं, विष्वासों तथा परम्पराओं आदि। सांस्कृतिक सम्पति को इस प्रकार से हस्तान्तरित करता है कि उनके हृदय में देष प्रेम तथा त्याग भावना प्रज्जवलित हो जाती है।

आकांक्षायें यदि घनात्मक होती है तो बालक का व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन अच्छा रहता है परन्तु यदि आकांक्षायें ऋणात्मक होती है तो बालक का व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन बिगड. जाता है।

बालक में सृजनात्मकता का विकास उस समय सामान्य और अच्छा होता है जब बालक मे उपलब्धि के लिए आकांक्षायें घनात्मक होती है। बालक मे जितना अधिक आकांक्षा स्तर होगा वह उतना ही अधिक सृजनषील होगा।

शोध के उद्देष्य :–

1. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों मे माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विघार्थियों के आकांक्षा स्तर पर उनकी सृजनात्मकता पर पड.ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. सरकारी विद्याालये मे अध्ययनरत विधार्थियों की सृजनात्कता का अध्ययन।
3. गैरसरकारीविद्यालयोंमेंअध्ययनरतविधार्थियोकीसृजनात्मकताकाअध्ययन।

शोध की परिकल्पनायें :–

1. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर उनकी सृजनात्मकता पर पड.ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।
2. सरकारी विद्यालयों मे अध्ययनरत विघार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

शोधमेंप्रयुक्ततकनीकी शब्दावली :–

1. माध्यमिक स्तर – माध्यमिक स्तर पर सामान्य रूप से 14 से 18 वर्ष के मध्य के विधार्थि षिक्षा प्राप्त करते हैं। इसके अन्दर कक्षा 9 से 12 तक की षिक्षा आती है।
2. आकांक्षा स्तर – लक्ष्य या मूल्य आदि को प्राप्त करने की इच्छा आकांक्षा कहलाती है तथा इन लक्ष्यों और मूल्यों के प्रति व्यक्ति की इच्छा की तीव्रता या स्तर ही आकांक्षा स्तर है।
3. सृजनात्मकता – सृजनात्मकता प्रत्यें व्यक्ति की क्रिया में पायी जाती है। इसक समान्तर विधायकता, उत्पादकता, रचनात्मक शब्दो का प्रयोग किया जाता है।

शोध कार्यकापरिसीमांकन :–

1. समय की सीमितता व उपलढध साधनों के आधार पर प्रस्तुत शोध जयपुर जिले के मात्र 120 विधार्थियों पर किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के दो सरकारी व दो गैर सरकारी विद्यालयों को शामिल किया गया है।
3. माध्यमिक स्तर पर विद्यालय प्रकार के लिए 60 विधार्थियों को सरकारी विद्यालय से व 60 विधार्थियों को गैर सरकारी विद्यालय से लिया गया है।
4. माध्यमिक स्तर पर लिंगभेद प्रकार के प्रभाव के अध्ययन के लिए 60 छात्र व 60 छात्राओं को लिया गया है।
5. प्रस्तुत अध्ययन में विधार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके आकांक्षा स्तर के प्रभावों का ही अध्ययन किया गया है।

प्रदतों का वर्गीकरण व विष्लेषण :–

1. इस शोध का प्रमुख उददे्ष्य माध्यमिक स्तर के विधार्थियों के आकांक्षा स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड.न वाले प्रभाव का अध्ययन करना था।
2. शोधकर्ता द्वारा विधार्थियों के आकांक्षा स्तर के अध्ययन हेतु पदतों का विभिन्न सांख्यिकि विधियों से विष्लेषित करके परिकल्पनाओं की सार्थकता की जांच की गयी है।
3. सरकारी विद्यालय के विधार्थियों की सृजनात्मकता का मध्यमान 22.06 है व गैर सरकारी विद्यालय के विधार्थियों की सृजनात्मकता का मध्यमान 22.74 प्राप्त हुआ है।
4. सरकारी विद्यालय के विधार्थियों की सृजनात्मकता का मानक विचलन 3. 577 व गैर सरकारी विद्यालय के विधार्थियो की सृजनात्मकता का मानक विचलन 3.624 है।

सरकारी एवंगैरसरकारी विद्यालय की सृजनात्मकता के मध्य सार्थकता अन्तर ज्ञात करने पर टी मान 0.119 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता के .01 तथा .05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शुन्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। जिससे निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सांख्यिकिय दृष्टि से सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके आकांक्षा स्तर के प्रभाव में सार्थक नही है।

भावी शोध हेतुसुझाव :–

1. वर्तमान शोध अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विधार्थियों का ही चयन किया गया है अतः भावी शोध मेंउच्चमाध्यमिक स्तर के विधार्थियोंकोभी शामिलकियाजासकताहै।
2. भावी अध्ययन में सृजनात्मकता को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों का भी अध्ययन दिया जा सकता है।
3. शोध अध्ययन में विधार्थियों की सृजनात्मकता के अलावा अन्य प्रभावी मनोवैज्ञानिक चरों को लेकर शोध कार्य किये जा सकते है।
4. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विधार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया जा सकता है।
5. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यमों के विधार्थियों के आकांक्षा स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भग्रन्थ :–

1. शर्मा, विरेन्द्र प्रकाष ''सामाजिक अन्वेषण की पध्दतियों पंचषील प्रकाषन, जयपुर 2010
2. प्रो. शर्मा वी. एन. ''अभिप्रेरणा के स्त्रोत, आवष्यकताओं इच्छायें वआकांक्षायें'' नेषनल पब्लिकेषन हाउस
3. भटनागर सुरेष ''षिक्षा मनोविज्ञान'' आर लाल बुक डिपो, मेरठ
4. Weblink–www.articles.timesofindia.com
5. www.researchgate.net/publication